शौचम्
अस्तेयम्
दमः
क्षमा
धृतिः
संस्कृत पाठमाला १
राहुल सांकृत्यायन

श्री विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला २७

॥ श्रीः ॥

संस्कृत पाठमाला

प्रथम पुस्तक

लेखकः—

महापण्डित राहुलसांकृत्यायन

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

१९६७

दो शब्द

३० वर्ष पहिले १९२६ ई० में मैं बौद्धधर्मके अध्ययन-के लिये सिंहल (श्री लङ्का) गया था। उस समय विद्यालंकार परिवेण (विहार) में रहते वहाँके भिक्षुओंको संस्कृत पढ़ाने लगा। सभी जगहोंके विद्यार्थियोंकी तरह वहाँके विद्यार्थी भी संस्कृत भाषासे बहुत डरते थे। उन्हें सुगम रास्तेसे ले जानेके लिये ये पाँच पोथियाँ लिखी गईं, जिनमें पाँचवींमें छन्द और अलंकार भी रख दिये गये। विद्यार्थियोंको ये बहुत सुगम प्रतीत हुईं। इन्हें सिंहल भाषा और सिंहल लिपिमें उसी समय छापा गया। अब तक इनके कितने ही संस्करण छप चुके हैं। मित्रोंने इन्हें हिन्दीके साथ छापनेके लिये कहा। पूर्ववत् छापना अच्छा न समझ मैंने बहुतसे परिवर्तन कर दिये। कितने ही नये उद्धरण दिये, और इनका रूप पाठमालाका बना दिया।

पाठक पहिली बार व्याकरणवाले भागको छोड़ सकते हैं। हाँ, पाठको कई बार दुहराना चाहिये।

चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला एवं चौखम्बा विद्याभवनके स्वामी तथा संस्कृत ग्रन्थोंके सबसे बड़े उद्धारक और प्रचारक बाबू जयकृष्णदासजी गुप्तने बड़ी प्रसन्नता और तत्परतासे इनके प्रकाशनका भार अपने ऊपर लिया। यदि संस्कृतके सार्वजनीन प्रसारमें इनसे सहायता मिली, तो मैं अपने प्रयत्नको सफल समझूँगा।

मसूरी १३–२–५६ राहुल सांकृत्यायन

प्रथम पुस्तक

प्रथमः पाठः

सिंहः अश्वः च	सिंह और अश्व (घोड़ा)
अनलः पवनः च	आग और पानी ।
द्रुमः च पर्वतः	वृक्ष और पर्वत ।
घटेन सह पुरुषः	घड़े के साथ आदमी ।
जनैः सह पोतः	लोगों के साथ जहाज ।
अश्वः गजेन सह	घोड़ा हाथी के साथ ।

च—और । सह—साथ ।

ऊपर के शब्द अकारान्त और पुँल्लिङ्ग हैं, उनकी विभक्तियों का रूप घट (घड़ा) शब्द की तरह निम्न प्रकार होता है—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा (कर्ताके लिये)	घटः	घटौ	घटाः
सम्बोधन	हे घट	हे घटौ	हे घटाः
द्वितीया (कर्म)	घटं	घटौ	घटान्
तृतीया (करण)	घटेन	घटाभ्यां	घटैः

घट की तरह ही निम्न अकारान्त शब्दों का भी रूप होता है—

जिनः (बुद्ध)	धवः (पति)	समुद्रः (सागर)
करः (हाथ)	दीपः (दीपक)	गृहाः (घर)
पादः (पैर)	गजः (हाथी)	संघः (समूह)
जनः (लोग)	अजः (बकरा)	पुत्रः (बेटा)
पुरुषः (आदमी)	वृषभः (बैल)	जनकः (पिता)
द्रुमः (वृक्ष)	शकटः (गाड़ी)	जनपदः (देश)
अनलः (आग)	मेषः (भेड़)	हंसः (हंस)
पवनः (हवा)	पोतः (जहाज)	वंशः (बांस)
अश्वः (घोड़ा)	मार्गः (रास्ता)	विष्टरः (बिस्तरा)

द्वितीयः पाठः

गृहेषु गवाक्षाः	घरों में जंगले ।
रामस्य मातुलस्य पुत्राः	राम के मामा के बेटे ।
घटे गोधूमाः	घड़े में गेहूँ ।
कपोतानां शावकाः नीडेषु	कबूतरों के बच्चे घोसलों में ।

अकारान्त पुँल्लिङ्ग घट शब्द के चतुर्थी आदि विभक्तियों में रूप*—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी (संप्रदान)	घटाय	घटाभ्यां	घटेभ्यः
पंचमी (अपादान)	घटात्	घटाभ्यां	घटेभ्यः
षष्ठी (सम्बन्ध)	घटस्य	घटयोः	घटानां
सप्तमी (अधिकरण)	घटे	घटयोः	घटेषु

---

*अकारान्त शब्दों में लगनेवाली विभक्तियों के चिह्न निम्न प्रकार हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवघन
१ (ने)	:	ौ	आः
संबोधन (हे)	०	ौ	आः
२ (को)	अं	औ	आन्
३ (से, द्वारा)	एन	आभ्यां	ऐः
४ (के लिये)	आय	आभ्यां	एभ्यः
५ (से)	आत्	आभ्यां	एभ्यः
६ (का)	स्य	योः	आनां
७ (में, पर)	ए	योः	एषु

घट की तरह ही सभी अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं—

आम्रः (आम)	पाषाणः (पत्थर)	कण्ठः (गला)
नृपः (राजा)	चूतः (आम)	नखः (नाखून)
छात्रः (विद्यार्थी)	पनसः (कटहल)	काकः (कौआ)
तडागः (पोखरा)	यवः (जौ)	पटः (कपड़ा)
पण्डितः (विद्वान्)	गोधूमः (गेहूँ)	तटः (किनारा)
वसन्तः (वसन्त ऋतु)	सर्षपः (सरसों)	मठः (मठ)
कपाटः (किवाड़)	तिलः (तिल)	मेघः (बादल)
गवाक्षः (जंगला)	मत्स्यः (मछली)	मातुलः (मामा)
शुकः (तोता)	मकरः (मगर)	श्यालः (साला)
पिकः (कोयल)	सर्पः (साँप)	कृषकः (किसान)
मृगः (हिरन)	स्कन्धः (कन्धा)	शावकः (बच्चा)
स्तूपः (चैत्य)	गुल्फः (एड़ी)	बाणः (तीर)
चषकः (प्याला)	कर्णः (कान)	अमात्यः (मंत्री)
वृक्षः (पेड़)	केशः (बाल)	व्याजः (बहाना, सूद)
ऋक्षः (भालू)	दन्तः (दाँत)	माषः (उदड़)

तृतीयः पाठः

माषाणां सूपम्	उड़द की दाल ।
दर्पणे मुखदर्शनम्	आईने में मुख देखना ।
शास्त्रे पण्डितः	शास्त्र का विद्वान् ।
मधुराणि आम्रस्य फलानि	मीठे आम के फल ।
वसन्ते सुन्दराणि पुष्पाणि	वसन्त में सुन्दर फूल ।
पुष्पाणां माला कृष्णस्य कण्ठे	फूलों की माला कृष्ण के गले में ।
पत्रं मसीपात्रं च छात्रस्य करे	कागज और दावात विद्यार्थी के हाथ में ।
सिंहानां मुखानि	सिंहों के मुँह ।
नृपस्य करे रत्नम्	राजा के हाथ में जवाहिर ।
पुरुषस्य भोजने लवणम्	आदमी के खाने में नमक ।
कृषकाणां क्षेत्रे गोधूमाः	किसानों के खेत में गेहूँ ।
स्फटिकस्य चषके जलम्	बिल्लोर के प्याले में पानी ।
तटाके कमलस्य पुष्पाणि	तालाब में कमल के फूल ।
ओदनं सूपं व्यञ्जनं च	भात, दाल और चटनी ।

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्दों के रूप अन्तिम पाँच विभक्तियों में पुंलिंग जैसे ही होते हैं, बाकी में कुछ भेद हैं, जैसे फल शब्द—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलं	फले	फलानि
सम्बोधन	हे फल	,,	,,
द्वितीया	फलं	,,	,,

इसी तरह अकारान्त नपुंसकलिंगी सभी शब्दों के रूप होते हैं—

सूपं (दाल या सूप)	ताम्रं (तांबा)	लवणं (नमक)
यन्त्रं (मशीन)	पित्तलं (पीतल)	उपधानं (तकिया)
मसीपात्रं (दावात)	सुवर्णं (सोना)	भूषणं (जेवर)
दर्पणं (आईना)	तीरं (तीर, तट)	शीलं (आचार)
पुष्पं (फूल)	मुखं (मुँह)	प्रधानं (मुख्य)
फलकं (तख्ता, पटरा)	नेत्रं (आँख)	स्तनं (स्तन)
शास्त्रं (शास्त्र)	उदरं (पेट)	पादत्राणं (जूता)
शस्त्रं (हथियार)	आसनं (आसन)	रजतं (चांदी)
रुधिरं (लोहू)	चित्तं (दिल)	श्रोत्रं (कान)
मांसं (गोश्त)	स्फटिकं (बिल्लौर)	शरीरं (देह)
कमलं (कमल)	पुण्यं (पुण्य)	क्षीरं (दूध)
ज्ञानं (ज्ञान)	पापं (पाप)	ओदनं (भात)
नगरं (शहर)	रत्नं (जवाहिर)	उदकं (पानी)
व्यञ्जनं (चटनी, अचार आदि)	मन्दिरं (देवालय, महल)	सुन्दरं (सुंदर अच्छा)
दुग्धं (दूध)	चित्रं (तसवीर, आश्चर्य)	कपालं (कपाल, ठीकरा)

सुन्दर, मधुर, प्रधान आदि विशेषण के लिङ्ग, वचन और विभक्ति विशेष्य शब्द के जैसे होते हैं, जैसे—

सुन्दराणि पुष्पाणि, सुन्दरः पुरुषः, सुन्दरी कन्या ।

चतुर्थः पाठः

मधुराणां फलानां वृक्षाः उद्याने	मीठे फलों के पेड़ बाग में।
पुस्तकं मसीपात्रं च बालकस्य करे	किताब और दावात लड़के के हाथमें।
आसन्दिकायां स्नुषा	कुरसी पर बहू।
विहारे परिव्राजिका छात्रा	बौद्धमठ में विद्यार्थिनी संन्यासिनी।
पिपीलिकानां मुखे तण्डुलानि	चींटियों के मुँह में चावल।
भार्यायै शाटिका लोहिता	पत्नी के लिये लाल साड़ी।
वसुन्धरायाः धनानि जनेभ्यः	पृथिवी का धन लोगों के लिये।

स्नुषा, छात्रा आदि आकारान्त स्त्रीलिंगी शब्दों की विभक्तियों के रूप माला की तरह निम्न प्रकार चलते हैं—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माला	माले	मालाः
सम्बोधन	हे माले	,,	,,
द्वितीया	मालां	,,	,,
तृतीया	मालया	मालाभ्यां	मालाभिः
चतुर्थी	मालायै	,,	मालाभ्यः
पञ्चमी	मालायाः	,,	,,
षष्ठी	,,	मालयोः	मालानां
सप्तमी	मालायां	,,	मालासु

इसी तरह सभी आकारान्त स्त्रीलिंगी शब्दों के रूप होते हैं; जैसे—

सुता (बेटी) कन्या (लड़की) सुधा (अमृत, चूना)
पिपीलिका (चींटी) भार्या (पत्नी) प्रजा (प्रजा, संतान)

विद्या (विद्या)	परिव्राजिका (संन्यासिनी)	चन्द्रिका (चांदनी)
ईर्ष्या (द्वेष)	निद्रा (नींद)	पताका (झंडा)
इच्छा (चाह)	तन्द्रा (आलस्य)	मक्षिका (मक्खी)
भिक्षा (भींख)	मुद्रा (सिक्का, मुहर)	शारिका (मैना)
नासिका (नाक)	मुक्ता (मोती)	शय्या (बिस्तरा)
आसन्दिका (कुरसी)	वसुन्धरा (पृथिवी)	पेटिका (सन्दूक)
वसुन्धरा (पृथिवी)	प्रज्ञा (ज्ञान, बुद्धि)	सुमित्रा (नाम)
स्नुषा (बहू)	एला (इलायची)	सीता (नाम)

पाठस्थ शब्द—

उद्यानं (बाग)	पुस्तकं (पोथी)	बालकः (लड़का)
छात्रा (विद्यार्थिनी)	तण्डुलं (चावल)	विहारः (मठ)
शाटिका (साड़ी)	धनं (धन)	

पंचमः पाठः

(विशेषण)

विशेषण लिङ्ग, वचन और विभक्ति में विशेष्य के अनुसार होते हैं, जिनके कुछ उदाहरण पहिले दे आये हैं, यहाँ भी उनके उदाहरण दिये जा रहे हैं, इनमें अकारान्त पुँल्लिङ्ग, अकारान्त नपुंसकलिङ्ग और आकारान्त स्त्रीलिङ्ग के रूप क्रमशः घट, फल और माला जैसे होते हैं—

पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मधुरः (मीठा)	मधुरं	मधुरा
भद्रः (अच्छा)	भद्रं	भद्रा

पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कृष्णः (काला)	कृष्णं	कृष्णा
प्रौढः (मजबूत)	प्रौढं	प्रौढा
कठिनः (कठोर)	कठिनं	कठिना
उन्नतः (ऊँचा)	उन्नतं	उन्नता
अल्पः (थोड़ा)	अल्पं	अल्पा
स्थूलः (मोटा)	स्थूलं	स्थूला
कृशः (दुबला)	कृशं	कृशा
शोभनः (अच्छा, सुन्दर)	शोभनं	शोभना

पर्वते कृष्णाः पाषाणाः — पहाड़ में काले पत्थर ।

आम्रस्य वृक्षाः उन्नताः — आम के पेड़ ऊँचे ।

गजानां शरीराणि स्थूलानि — हाथियों के शरीर मोटे ।

भद्रं वाराणसीनगरं गंगायाः तीरे — गंगा के किनारे अच्छा बनारस शहर ।

स्थूलकायानां मनुष्याणां संघः — मोटे शरीरवाले आदमियों का समूह

मिथिलायां सीतायाः जनकः जनकः नृपः — मिथिला (नगर) में सीता का पिता राजा जनक ।

विद्याधनं धनं प्रधानम् — विद्याधन मुख्य धन ।

अशोकस्य सुता संघमित्रा पाटलिपुत्रे — अशोक की लड़की संघमित्रा पटना में ।

ग्रामेषु शोभनानि क्षेत्राणि — गांवों में सुन्दर खेत ।

पक्वानि मधुराणि च पनसस्य फलानि — पके और मीठे कटहल के फल

मधुरा शर्करा, क्षारं समुद्रजलम्	मीठी चीनी, नमकीन समुद्र का पानी
सुन्दरः बालः रथ्यायाम्	सड़क पर सुन्दर लड़का।
मदेन विना मादकं धनम्	विना नशा के नशीला धन।
सकलः ग्रामः यात्रोत्सवे	सारा गांव मेले में।
पुत्रे प्रीता महिला	महिला पुत्र से प्रसन्न।

पाठस्थ शब्द—

क्षेत्रं (खेत)	जनकः (पिता)	पक्वं (पका)
क्षारं (नमकीन)	रथ्या (सड़क)	मदः (निशा)
मादकः (नशेवाला)	सकलः (सब)	यात्रोत्सवः (मेला)
प्रीता (खुश)	महिला (स्त्री)	शर्करा (शक्कर, चीनी)

षष्ठः पाठः

रावणः लङ्कायां वसति	रावण लंका में बसता है।
जनकस्य पुत्रः चूतस्य फलं खादति	जनक का बेटा आम का फल खाता है।
पुरुषः भार्य्यायै पुष्पं उपहरति	पुरुष पत्नी के लिये फूल उपहार देता है।
परिव्राजकः देशान् अटति	संन्यासी देश घूमता है।
शिष्यः आचार्यं नमति	शिष्य आचार्य को नमस्कार करता है।
जनाः पोतेन समुद्रं तरन्ति	लोग जहाज से समुद्र पार करते हैं।
द्रुमात् वानरः पतति	पेड़ से बानर गिरता है।

भीमः पुस्तकं स्मरति	भीम पुस्तक याद करता है।
गुरुवरः साम्यवादं दिशति	गुरुवर साम्यवाद का उपदेश करता है।
मनुष्यः शस्त्रेण पथिकं प्रहरति	आदमी हथियार से बटोही पर प्रहार करता है।

वर्तमान काल (लट्) क्रिया, चल (चलना) धातु—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सः (वह) चलति	(तौ) चलतः	(ते) चलन्ति
म० पु०	त्वं (तू) चलसि	(युवां) चलथः	(यूयं) चलथ
उ० पु०	अहं (मैं) चलामि	(आवां) चलावः	(वयं) चलामः

ऐसे ही निम्न धातुओं के रूप चलते हैं—

लिखति (लिखता है)	वहति (ढोता, बहता है)
परिहरति (छोड़ता है)	रक्षति (रखता, रक्षा करता है)
उपहरति (पास लेजाता है, उपहार देता है)	वदति (बोलता है)
	आयाति (आता है)
पठति (पढ़ता है)	आनयति (लाता है)
पिबति (पीता है)	सरति (खिसकता है)
याति (जाता है)	निस्सरति (निकलता है)
नयति (ले जाता है)	नदति (शब्द करता है)
प्रहरति (मारता है)	विलसति (विलास करता है)
प्रसरति (फैलता है)	पतति (गिरता है)
उपसरति (पास जाता है)	चोरयति (चुराता है)
लसति (शोभा देता है)	स्मरति (याद करता है)

जीवति (जीता है) स्नाति (नहाता है)
विहरति (विहरता है) दिशति, उपदिशति
प्रेरयति (प्रेरणा करता है) (उपदेश करता है)
स्वदति (आस्वादन करता है) भवति (होता है)
क्षरति (टपकता है) तरति (पार होता है)
अटति (घूमता है) गच्छति (जाता है)

सप्तमः पाठः

ब्राह्मणस्य सुता कुत्र याति ? — ब्राह्मण की लड़की कहाँ जाती है ?
सः शकटः नगरे चलति — वह गाड़ी नगर में चलती है ।
देवदत्तः कोलम्बनगरे चिरं वसति — देवदत्त कोलम्बो नगर में बहुत रहा ।
शिवस्य स्नुषा कदा गृहं आयाति ? — शिव की पुत्रवधू कब घर आती है ?
ग्रामात् बहिः चूतस्य द्रुमः, तत्र शुकाः वसन्ति — गांव से बाहर आम का वृक्ष, वहां तोते बसते हैं ।
प्रातः सायं पवनः शनैः शनैः वहति — शाम सवेरे हवा धीरे-धीरे बहती है ।
लङ्काद्वीपे गजाः मुक्ताः चायरबरौ च भवन्ति — लङ्का द्वीप में हाथी, मोती, चाय और रबड़ होते हैं ।

शब्द (अव्यय)

अत्र	(यहाँ)	पूर्वं	(पहिले)
तत्र	(वहाँ, तहाँ)	पश्चात्	(पीछे)
यत्र	(जहाँ)	अन्तः	(भीतर)
कुत्र	(कहाँ)	बहिः	(बाहर)
सर्वत्र	(सब जगह)	प्रायः	(अधिकतर)
इदानीं	(अब)	चिरं	(देर तक)
तदानीं	(तब)	उच्चैः	(ऊँचे)
यथा	(जैसे)	श्वः	(भावी कल)
तथा	(तैसे)	परश्वः	(परसों)
सर्वथा	(सब तरह)	अद्य	(आज)
स्वयं	(अपने)	अलं	(बस)
नाना	(अनेक)	शनैः	(धीरे)
विना	(बगैर)	एव	(ही)
प्रातः	(सबेरे)	अपि	(भी)
सायं	(शाम)	एवं	(ऐसे)
पुनः	(फिर)	कथं	(कैसे)
ह्यः	(बीता कल)	किं	(क्या)
तदा	(तब)	नीचैः	(नीचे)
यदा	(जब)	न, नो	(नहीं)
कदा	(कब)	च	(और)

अष्टमः पाठः

ह्यः नन्देन परिव्राजिकायै भोजनं दत्तम्	कल नन्द ने संन्यासिनी को भोजन दिया ।
आचार्यस्य गृहे छात्रैः स्वयं ग्रन्थः पठितः	आचार्य के घर में विद्यार्थियों ने स्वयं पोथी पढ़ी ।
जयसिंहस्य स्नुषया स्वयं पत्रं लिखितम्	जयसिंह की पुत्रवधू ने अपने पत्र लिखा ।
शिवस्य जनकेन चिरं धर्मः सेवितः	शिव के पिता ने चिर तक धर्म का सेवन किया ।
पूर्वं लंकाद्वीपे रामेण राक्षसाः हताः	पहिले लङ्काद्वीप में राम ने राक्षस मारे ।
दण्डकवने रावणेन सीता हृता	दंडकारण्य में रावण ने सीता हरी ।
दत्तं भुक्तं एव धनम्	दिया भोगा ही धन (है)।
पथिकेन जलं पीतं भोजनं च भुक्तम्	बटोही ने जल पिया और भोजन किया ।
गङ्गा-यमुनयोः संगमः प्रयागे	गंगा यमुना का संगम प्रयाग में(है)

भूतकाल में त (क्त) प्रत्यय से भी क्रिया बनती है, पर तब कर्ता में तृतीया विभक्ति लगती है और क्रिया कर्म के विशेषण के तौर पर उसी के अनुसार लिंग और वचन (विभक्ति) वाली होती हैं । ऐसी कुछ क्रियायें निम्न हैं—

दत्तं (दिया)	क्रीतं (खरीदा)	खण्डितं (तोड़ा)
भुक्तं (खाया)	विक्रीतं (बेंचा)	ईप्सितं (चाहा)

पीतं (पिया)	**प्रकाशितं** (प्रकाश किया)	**इच्छितं** (चाहा)
आदत्तं (लिया)	**चोरितं** (चुराया)	**गीतं** (गाया)
हृतं (हरा)	**सेवितं** (सेवा की)	**वादितं** (बजाया)
पठितं (पढ़ा)	**हतः** (मारा)	**नर्तितं** (नाचा)
चरितं (आचरण किया)	**सिक्तं** (सींचा)	**तर्पितं** (तृप्त किया)
लिखितं (लिखा)	**उक्तं** (कहा)	**भर्त्सितं** (डांटा)
उपहृतं (उपहार दिया)	**कीर्णं, विकीर्णं** (बिखरा)	**मण्डितं** (भूषित किया)

नवमः पाठः*

श्वः यदा महेन्द्रः आगमिष्यति कल जब महेन्द्र आयेगा
तदा पाठः भविष्यति तो पाठ होगा।

---

* वर्तमान काल के चिह्न (प्रत्यय) पुरुषों और वचनों में निम्न प्रकार हैं—

ति तः न्ति, सि थः थ, मि वः मः

और भविष्यत्काल के—

स्य(ष्य)ति स्यतः स्यन्ति, स्यसि स्यथः स्यथ, स्यामि स्यावः स्यामः

अर्थात् वर्तमान के प्रत्यय के पहिले स्य जोड़ देना होता है। भविष्यत्काल में किन्हीं धातुओं में **स्य** के पहिले इ (इष्य) जोड़ते हैं, किन्हीं में नहीं।

आकारान्त (दा, पा आदि) धातुओं में **इ** नहीं लगाई जाती।

जिन में **इ** लगती है, उनमें **त** (क्त) प्रत्ययवाले भूतकाल के रूप में भी वह लगती है।

तत्र सभायां शिवेन यथा कथितं तथा भविष्यति	वहां सभा में शिवने जैसा कहा, तैसा होगा।
पर्वतात् पाषाणः यदा पतिष्यन्ति तदा कुत्र भविष्यामः	जब पहाड़ से पत्थर गिरेंगे तब हम कहां होंगे ?
सः पूर्वं भोजनं करिष्यति पश्चात् नगरं गमिष्यति	वह पहिले भोजन करेगा, फिर नगर जायेगा।
प्रातः पूर्वदिशायां सूर्यस्य प्रभा प्रसरति	सबेरे पूर्व दिशा में सूर्य का प्रकाश फैलता है।
श्वः विश्वामित्रः पोतेन महासमुद्रं तरिष्यति	कल विश्वामित्र जहाज से महासमुद्र पार होगा।
वसन्ते उद्याने चूताः फलन्ति	वसन्त में बाग में आम फलते हैं।
मृगः यदा एव ग्रामे गमिष्यति, तदा एव मरिष्यति	मृग जभी गांव में जायेगा, तभी मरेगा।

भविष्यत्काल (लृट् लकार) में चल (चलना) धातु के रूप—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
म० ,,	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उ० ,,	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

इसी प्रकार निम्न धातुरूप भी चलते हैं—

पठिष्यति (पढ़ेगा)	स्मरिष्यति (याद करेगा)
दास्यति (देगा)	भविष्यति (होगा)
यास्यति (जायेगा)	आदास्यति (लेगा)

लिखिष्यति (लिखेगा)
पास्यति (पीयेगा)
स्नास्यति (नहायेगा)
फलिष्यति (फलेगा)
हास्यति (छोड़ेगा)
चरिष्यति (आचरेगा)
विहरिष्यति (विहरेगा)
चोदयिष्यति (प्रेरेगा)
प्रसरिष्यति (फैलेगा)
परिहरिष्यति (छोड़ेगा)
मरिष्यति (मरेगा)
चोरयिष्यति (चोरी करेगा)
स्फोटयिष्यति (फोड़ेगा)
पतिष्यति (गिरेगा)
ताडयिष्यति (ताडेगा)

आयास्यति (आयेगा)
वदिष्यति (बोलेगा)
स्थास्यति (ठहरेगा)
करिष्यति (करेगा)
हरिष्यति (हरेगा)
धास्यति (धारेगा)
गमिष्यति (जायेगा)
प्रहरिष्यति (मारेगा)
मारयिष्यति (मारेगा)
नदिष्यति (शब्द करेगा)
प्रेरयिष्यति (प्रेरेगा)
जीविष्यति (जीयेगा)
हसिष्यति (हंसेगा)
भर्जयिष्यति (भूनेगा)
संहरिष्यति (संहार, इकट्ठा करेगा)

दशमः पाठः

वह वह हे पवन, वयं नगरं यास्यामः एव	बह बह हवा, हम नगर जायेंगे ही ।
गर्जतु तर्जतु मेघः कृषकाः क्षेत्रे यास्यन्ति	गर्जे तर्जे मेघ, किसान खेत में जायेंगे ।
माधवः मठाय धनं दास्यति	माधव मठ में धन देगा ।
बहुजनहिताय बहुजनसुखाय चरन्तु	बहुजन के हित–सुख के लिये आचरें (सब) ।
पुरुषाय जलं यच्छानि भोजनं वा ?	पुरुष को जल दूँ या भोजन ?
क्रीडत बालाः सुखेन क्षेत्रे	बालक सुख से खेत में तुम खेलो,
स्मर पुस्तकं कालः शीघ्रं याति	पोथी याद कर, काल जल्दी बीतता है ।
जयतु बहुजनहितं, नश्यतु दुःखम्	बहुजनहित की जय हो, दुःख दूर हो ।

आज्ञा (लोट्) वाली चल क्रिया के रूप निम्न प्रकार होते हैं—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	चलतु	चलतां	चलन्तु
म०	चल	चलतं	चलत
उ०	चलानि	चलाव	चलाम

इसी तरह निम्न रूप भी—

भवतु (होवे)	क्रीडतु (खेले)	रोहतु (उगे)
वदतु (बोले)	अर्चतु (पूजे)	क्रोशतु (चिल्लाये)
पठतु (पढ़े)	गर्जतु (गरजे)	जयतु (जीते)
लिखतु (लिखे)	तर्जतु (तरजे)	अवतु (रक्षा करे)
वसतु (बसे)	पचतु (पकाये)	स्मरतु (याद करे)
सरतु (सरके)	परिहरतु (छोड़े)	सरतु (खिसके)
अपसरतु (दूर हटे)	वसतु (बसे)	प्रसरतु (फैले)
गच्छतु (जावे)	पिबतु (पीये)	वमतु (कै करे)
अपगच्छतु (हटे)	धारयतु (धारे)	क्वथतु (उबाले)
वहतु (बहे, ढोवे)	सिञ्चतु (सींचे)	शपतु (शाप देवे)
आवहतु (लावे)	रक्षतु (रक्खे)	ज्वलतु (जले)
चरतु (चरे)	खादतु (खाये)	तिष्ठतु (ठहरे)
हरतु (हरे)	सीदतु (बैठे)	कर्षतु (खींचे)
दहतु (जलावे)	यच्छतु (देवे)	सर्पतु (जावे)
मूर्च्छतु (मूर्छे)	तपतु (तपे)	उपसर्पतु (पास जावे)
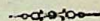
एकादशः पाठः

जनकस्य पादेन शपामि, अहं कार्यं करिष्यामि	पिता का पैर छू कर कहता हूँ, मैं काम करूँगा।
ह्यः कोलम्बनगरे सभायां ते ब्राह्मणाः अभवन्	कल कोलम्बो की सभा में वे ब्राह्मण थे।
कल्याणिगंगायाः तीरे एव कल्याणिचैत्यविहारः अभवत्	कल्याणी नदी के तीर पर ही कल्याणी चैत्य विहार था।
तत्र पुरुषाः महिलाः च पूर्णिमायां पूजायै अगच्छन्	वहाँ पुरुष और स्त्रियाँ पूर्णिमा को पूजा के लिये जाते।
पूर्वं मगधजनपदे राजगृहनगरे बिम्बसारः नृपः अभवत्	पहिले मगध देशमें राजगृह नगरमें बिम्बसार राजा हुआ।
बिम्बसारस्य पुत्रः पश्चाद् मगधसिंहासनम् अरुहत्	बिम्बसार का पुत्र पीछे मगधसिंहासन पर बैठा।
एकदा सम्बुद्धः जैत्रवने अनाथपिण्डकस्य आरामे विहरति	एक बार बुद्ध अनाथपिण्डक के आराम जेतवनमें रहते (थे)
गयायां वज्रासनं, यत्र वैशाखपूर्णिमायां बुद्धेन संबोधिः प्राप्ता	गया में वज्रासन है जहाँ वैशाखपूर्णमासी को बुद्ध ने परमज्ञान प्राप्त किया।

उपर्युक्त हिन्दी अनुवाद का स्वरचित संस्कृत में अनुवाद करो।

चल (चलना) का भूतकाल (लङ्) में रूप—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	अचलत्	अचलतां	अचलन्
म०	अचलः	अचलतं	अचलत
उ०	अचलं	अचलाव	अचलाम

ऐसे ही निम्न रूप भी—

अतपत् (तप किया) अशपत् (शाप दिया) अवर्षत् (बरसा)
अगर्जत् (गरजा) अभवत् (हुआ) असीदत् (बैठा)
अवदत् (बोला) अभ्रमत् (घूमा) अक्रीडत् (खेला)
अरुहत् (चढ़ा) अरसयत् (रस लिया) अगदत् (कहा)
अस्मरत् (याद किया) अक्कथत् (उबाला) अपतत् (गिरा)
अचोरयत् (चुराया) अक्रीडयत् (खेला) अछेदयत् (काटा)
असुखयत् (सुख दिया) अकुट्टयत् (कूटा) अभक्षयत् (खाया)
अपीडयत् (पेला, पीड़ा दिया) अचित्रयत् (चित्र खींचा) अभूषयत् (भूषित किया)
अघोषयत् घोषणा की) अवर्णयत् (वर्णन किया) अशब्दयत् (शब्द किया)
अचरत् (आचरण किया) अस्फोटयत् (स्फुटित किया) अदमयत् (दमन किया)

विशेष शब्द—

कार्यं (काम) पूजायै (पूजाके लिये) आरामः (बाग)

द्वादशः पाठः

सर्वे जनाः यत्र निवसन्ति,	सब लोग जहाँ बसते हैं,
तत्र ते अपि भविष्यन्ति	वहाँ वे भी होंगे ।
एकदा स पूर्वेषां ग्रन्थान् अपठत्	एक बार उसने प्राचीनों के ग्रंथ पढ़े ।
तेषु अनेकानि वाक्यानि अपश्यत्	उनमें अनेक वाक्य देखे ।
लंकायाः पूर्वस्यां महासमुद्रः,	लंकाके पूर्वमें (जो) बड़ा समुद्र (है)
तस्य परस्माद् ब्रह्मदेशः	उसके बाद बर्मा देश (है) ।
लंकाद्वीपे ग्रामेषु नगरेषु	लंकाद्वीपमें गाँव, नगर,
वनेषु क्षेत्रेषु सर्वत्र	वन, मैदान सर्वत्र
नारिकेल-पूग-तालद्रुमाः भवन्ति	नारियल, सुपारी और ताल के वृक्ष होते हैं ।

नारिकेलः (नारियल) पूगः (सुपारी)

पुंलिंग तद् (वह) सर्वनाम के रूप—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तं	,,	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्यां	तैः
चतुर्थी	तस्मै	,,	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	,,	,,
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषां
सप्तमी	तस्मिन्	,,	तेषु

नपुंसकलिंग तद् (वह) सर्वनाम के रूप—

प्रथमा	तद्	ते	तानि
द्वितीय	,,	,,	

शेष पुंलिङ्ग जैसे—

स्त्रीलिङ्ग तद् (वह) सर्वनाम के रूप—

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	तां	,,	,,
तृतीया	तया	ताभ्यां	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	,,	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	तयोः	तासां
सप्तमी	तस्यां	,,	,,

तद् के समान ही निम्न सर्वनामों के रूप भी होते हैं—

यत् (जो)

पुंल्लिङ्ग	यः	यौ	ये
नपुंसकलिङ्ग	यत्	ये	यानि
स्त्रीलिङ्ग	या	,,	याः

(शेष विभक्तियाँ भी तद् जैसी)—

किम् (कौन)

पुंल्लिङ्ग	कः	कौ	के
नपुंसकलिङ्ग	किम्	के	कानि
स्त्रीलिङ्ग	का	,,	काः

एतद् (यह)

पुंल्लिङ्ग	एषः	एतौ	एते
नपुंसकलिङ्ग	एतद्	एते	एतानि
स्त्रीलिङ्ग	एषा	,,	एताः

सर्व (सब)

पुंल्लिङ्ग	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
नपुंसकलिङ्ग	सर्वं	सर्वे	सर्वाणि
स्त्रीलिङ्ग	सर्वा	,,	सर्वाः

ऐसे ही विश्व (सब), अन्यद् (अन्य), पूर्व (पहिला), पर (पिछला), एक (एक) के भी रूप ।
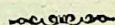
त्रयोदशः पाठः

सर्वेषां पुरः उच्चैः एतद् घोषयामः	सबके सामने जोर से यह घोषित करता हूँ ।
सः मम किं करिष्यति, यदि अहं तत्र गत्वा वदामि	वह मेरा क्या करेगा, यदि मैं वहाँ जाकर कहूँ ?
नृपाणां भवन्ति अनेके अमात्याः, ताः संभूष्य तत्र हरिष्यन्ति	राजाओं के अनेक अमात्य होते हैं, वे उन (कुमारियों) को अलंकृत करके वहाँ ले जायेंगे ।
एकं नारिकेलिफलम् उपहृत्य आचार्यस्य समीपं गच्छति	एक नारियल उपहार लेकर आचार्य के समीप जाता है ।

किं तस्य फलं, यदि सः शीघ्रं तत् संचूर्ण्य काले तत्र न नयति ?	उसका क्या फल, यदि वह जल्दी उसे पीस कर समय पर वहाँ नहीं ले जाता ?
महिलानां शीलं भूषणं, न भूषणं भूषणम्	महिलाओं का शील भूषण है, न कि भूषण भूषण है ।

त्वा (क्त्वा) धातु के साथ लगाने पर "करके" यह अर्थ होता है । धातु के पहिले उपसर्ग लगा हो; तो उसी अर्थ में त्वा नहीं य (ल्यप्) लगाया जाता है ।

धातुओं के आदि में लगने पर अर्थ बदलनेवाले उपसर्ग निम्न हैं—

प्र, परा, अप, सं, अनु, अव, निस् (निर्), दुस् (दुर्), वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप ।

त्वा वाले रूप—

नदित्वा (नादकर)	हृत्वा (हरणकर)	श्रुत्वा (सुनकर)
पठित्वा (पढ़कर)	गदित्वा (बोलकर)	चलित्वा (चलकर)
गर्ज़ित्वा (गरजकर)	लिखित्वा (लिखकर)	क्वथित्वा (उबालकर)
भूषयित्वा (भूषितकर)	गायित्वा (गाकर)	चोरयित्वा (चुराकर)
कृत्वा (करके)	हृत्वा (हरकर)	गत्वा (जाकर)
उक्त्वा (कहकर)	भुक्त्वा (खाकर)	पृष्ट्वा (पूछकर)
चित्रयित्वा (चित्रितकर)	क्रीडयित्वा (खेलकर)	शब्दयित्वा (शब्दकर)
ताडयित्वा (ताड़नकर)	पीडयित्वा (पीड़नकर)	मारयित्वा (मारकर)

य (ल्यप्) वाले रूप—

विलिख्य (लिखकर)	प्रकाश्य (प्रकाशितकर)	निगद्य (बोलकर)

प्रहृत्य (प्रहारकर) आहृत्य (आहारकर) संहृत्य (संहारकर)
परामृश्य (परामर्शकर) अपवार्य (हटाकर) संपीड्य (संपीड़नकर)
निर्गत्य (निकलकर) अनुकृत्य (अनुकरणकर) अवधूय (हटाकर)
निष्पीड्य (बहुत पीड़नकर) नन्दित्वा (खुश होकर)
अधिष्ठाय (अधिष्ठाता बनकर) उद्गम्य (ऊपर उठकर)
अभिगम्य (पास जाकर) प्रतिष्ठाय (प्रतिष्ठित होकर)
विहृत्य (विहारकर) संभूष्य (अच्छा भूषितकर)
प्ररुध्य (बहुत रोकर) आगम्य (आकर)

चतुर्दशः पाठः

राम-कृष्णौ पठन्तौ धूमयानेन कोलम्बनगरं गच्छतः	राम और कृष्ण पढ़ते हुये रेल से कोलंबो जाते हैं।
तस्यां कन्यायां गायन्त्यां	उस कन्या के गाते (समय)
सर्वे जनाः तूष्णीं तिष्ठन्ति	सब लोग चुप रहते हैं।
खादन् न गच्छामि हसन्	खाते हुए नहीं जाऊँगा हंसते हुए
न जल्पामि रुदन् न पठामि	नहीं बोलूँगा; रोते हुए नहीं पढ़ूँगा।
क्षिप्रं पुत्र, आगच्छ अहं त्वां फलं दास्यामि	आ पुत्र, जल्दी आ, मैं तुझे फल दूँगा।

चौरः इव तूष्णीं शीघ्रं शीघ्रं	चोर की तरह चुपचाप और जल्दी-
च कुत्र अपि अगच्छत् देवदत्तः	जल्दी कहाँ गया देवदत्त ।
त्वरितं त्वरितं गच्छामः, नो	जल्दी-जल्दी चलें, नहीं तो
चेद् धूमयानं गतं भविष्यति	रेल जा रहेगी ।
अत्रत्याः सर्वे अपि छात्राः	यहाँ के सारे विद्यार्थी
तत्रत्येभ्यः किं अपि यच्छन्ति	वहाँ वालों को कुछ देते हैं ।
कुत्रत्यः एष पुरुषः, यः	कहाँ का यह पुरुष (है), जो
रामेण सह अत्र आगतः	रामके साथ यहाँ आया ?

धूमयानं (रेल) त्वरितं (जल्दी) क्षिप्रं (जल्दी)
नो चेत् (नहीं तो) अत्रत्यः (यहाँ वाला) कुत्रत्यः(कहाँ वाला)

न्, न्त प्रत्यय का अर्थ है, क्रिया चल रही है, यह विशेषण के तौर पर आती है, इस लिये इसके रूप लिंग, विभक्ति और वचन विशेष्य के समान होते हैं । रूप निम्न प्रकार हैं—

पुंल्लिङ्ग पठन् (पढ़ते हुये—

प्रथमा	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
संबोधन	हे पठन्	,,	,,
द्वितीया	पठतं	,,	पठतः
तृतीया	पठता	पठद्भ्यां	पठद्भिः
चतुर्थी	पठते	,,	पठद्भ्यः
पंचमी	पठतः	,,	,,
षष्ठी	,,	,,	,,
सप्तमी	पठति	,,	पठत्सु

नपुंसकलिंग पठत्—

प्रथमा	पठत्	पठती	पठन्ति
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष पुंलिंग जैसा—

स्त्रीलिंग पठन्ती—

प्रथमा	पठन्ती	पठन्त्यौ	पठन्त्यः
संबोधन	हे पठन्ति	,,	,,
द्वितीया	पठन्तीं	,,	पठन्तीः
तृतीया	पठन्त्या	पठन्तीभ्यां	पठन्तीभिः
चतुर्थी	पठन्त्यै	,,	पठन्तीभ्यः
पंचमी	पठन्त्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	पठन्त्योः	पठन्तीनां
सप्तमी	पठन्त्यां	,,	पठन्तीषु

गौरी, लक्ष्मी आदि ईकारान्त शब्दों के रूप भी पठन्ती की तरह होते हैं। निम्न न्, न्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप ऊपर की तरह होंगे –

गच्छन् (जाते हुए) चलन् (चलते हुए) वदन् (बोलते हुये)
गर्जन (गरजते हुये) खादन् (खाते हुये) जल्पन् ,, ,,
रुदन् (रोते हुये) हसन् (हंसते हुये) तिष्ठन् (खड़े हुये)

पञ्चदशः पाठः

अस्माकं जनपदे ग्रामेषु गोधूमानां क्षेत्राणि	हमारे जनपद में गांवों में गेहूँ के खेत हैं।
तेषां नगरे के के पण्डिताः वसन्ति ?	उनके नगर में कौन-कौन पण्डित रहते हैं ?
खादित्वा किंचित् फलं मह्यं यच्छ	खा कर थोड़ा फल मुझे दे।
तव मित्रं काश्यपं इदानीं अत्र न पश्यामः	तेरे मित्र काश्यप को अभी यहाँ नहीं देखते हैं।
यत् पुस्तकं माधवः पठति, तत् यूयं कथं न पठथ ?	जिस पुस्तक को माधव पढ़ता, उसे तुम क्यों नहीं पढ़ते।

• सन्धि—

जहाँ दो स्वरों के पास होने पर दोनों या उनमें से एक के रूप में परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

उनके कुछ नियम हैं—

१. अ + ऋ = अर्, व्यास + ऋषिः = व्यास् + अ + ऋ + षिः = व्यास् + अर् + षिः, व्यासर्षिः।

२. अ + इ = ए, लंका + ईशः = लंक् + आ + ई + शः = लंक् + ए + शः = लंकेशः।

३. अ + उ = ओ, महा + उदरः = मह् + आ + उ + दरः = मह् + ओ + दरः = महोदरः।

अहं (मैं) सर्वनाम तीनों लिङ्ग में निम्न प्रकार आता है—

प्रथमा	अहं	आवां	वयम्
द्वितीया	मां	,,	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्यां	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यं	,,	अस्मभ्यं
पंचमी	मत्	आवाभ्यां	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकं, नः
सप्तमी	मयि	,,	अस्मासु

षोडशः पाठः

अद्याहं ग्रामं गच्छामि,	आज मैं ग्राम जाऊँ,
युष्माभिः अपि गन्तव्यम्	तुम्हें भी चलना चाहिये ।
त्वया किं भोजनं कृतं,	तुमने क्या खाया,
ओदनं मिष्टान्नं वा ?	भात या मिठाई ?
संस्कृतस्य पुस्तकानि सर-लानि, व्याकरणं च कठिनम्	संस्कृत की पुस्तकें आसान, व्याकरण कठिन (है) ।
युष्माकं मित्रेण रामेण एतत् पठितव्यम्	तुम्हारे मित्र राम को यह पढ़ना चाहिये ।
युष्मभ्यं किं दातव्यं इति ते पृच्छन्ति	तुम्हें क्या देना चाहिये, यह वे पूछते हैं ।
मधुरं वदन् सर्वस्य प्रियः भवति	मीठा बोलता सबका प्रिय होता है ।

कः अपि खादन् खादन्	कोई खाते खाते
नश्यति, कः अपि अन्नं न प्राप्य	नष्ट होता; कोई भोजन न पाकर।
वर्षायां गर्जन्तः मेघाः सर्वत्र धावन्ति	वर्षा में गरजते हुये मेघ सब जगह दौड़ते हैं।

सन्धि—

४. अ + अ = आ, बाल + अवतारः = बालावतारः।

५. अ + उ = ओ, क्षीर + उदकं = क्षीरोदकम्।

६. अ + ए = ऐ, तस्य + एकः = तस्यैकः।

७. इ + इ = ई, हरि + इन्द्रः = हरीन्द्रः।

८. उ + उ = ऊ, मधु + उदकं = मधूदकम्।

त्वं (तू) सर्वनाम सब लिंगों में एक सा निम्न प्रकार आता है—

प्रथमा	त्वं	युवां	यूयं
द्वितीया	त्वां	,,	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्यां	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यं	,,	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	,,	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकं, वः
सप्तमी	त्वयि	,,	युष्मासु

तव्य—प्रत्यय के अन्त में आने पर अर्थ चाहिये या योग्य हो जाता है-

कर्तव्यं (करना चाहिये) पठितव्यं (पढ़ना०) दातव्यं (देना०)
लिखितव्यं (लिखना०) आगन्तव्यं (आना०) भोक्तव्यं (खाना०)
हसितव्यं (हसना०) हर्तव्यं (हरना०) वक्तव्यं (बोलना०)
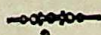
सप्तदशः पाठः

कपयः वने वृक्षेषु क्रीडन्ति	वानर वनमें वृक्षपर खेलते हैं ।
मुनयः सुखेन विहरन्ति	मुनि सुखसे विहरते हैं ।
अतिथये ओदनं सूपं मिष्टान्नं च हर	अतिथि के लिये भात, सूप और मिठाई ले जा ।
रवौ प्रकाशिते न चौराणां भयम्	सूर्य के प्रकाशित होने पर चोरोंका भय नहीं ।
कुसीदयः दरिद्राणां धनं हरन्ति	सूदखोर गरीबों का धन हरते हैं ।
व्याडिः पुरा व्याकरणस्य एकः आचार्यः अभवत्, येन 'संग्रहः' रचितः	व्याडि प्राचीनकाल में व्याकरणका एक आचार्य हुआ, जिसने 'संग्रह' रचा ।

रवौ प्रकाशिते—रवि के प्रकाशित होने पर। (यहां कालसूचक सप्तमी है)।

इकारान्त पुंल्लिङ्ग मुनि शब्द के रूप—

प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
सम्बोधन	हे मुने	,,	,,
द्वितीया	मुनिं	,,	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्यां	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	,,	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	,,	,,
षष्ठी	,,	मुन्योः	मुनीनां
सप्तमी	मुनौ	,,	मुनिषु

इसी प्रकार दूसरे इकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं—

हरिः (विष्णु, सिंह)	रविः (सूर्य)	कपिः (वानर)
पाणिः (हाथ)	बलिः (बलि, कर)	विधिः (कानून)
वासुकिः (नाग)	अतिथिः (मेहमान)	अग्निः (आग)
सारथिः (रथवान्)	व्याधिः (रोग)	कुक्षिः (कोख)
अंजलिः (अंजुरी)	शिविः (देशका नाम)	यतिः (साधु)

सन्धिः—

९. उ + स्वरवर्ण = व् + स्वरवर्ण, मनु + आदि = मन् + उ + आ + = मन् + व् + आदि = मन्वादि ।

१०. इ + स्वरवर्ण = य् + स्वरवर्ण, इति + आदि = इत् + इ + आ + दि = इत् + य् + आदि = इत्यादि ।

अष्टादशः पाठः

पुरा कोसलदेशे श्रावस्ती नाम नगर्यभवत्, तत्र सुदत्तः नाम कश्चिद् धनिकः वसति। सः नित्यं अनाथेभ्यः पिंडं यच्छति, एवं तस्य लोके अनाथपिंडदः इति नामाभवत्, तेन कस्मात्-चित् राजकुमारात् आरामः क्रीतः, तत्र च बुद्धाय विहारः निर्मितः। श्रावस्त्यां जेतवने अनाथपिंडदस्य आरामे संबुद्धः विहरति ।

[पूर्वकालमें कोसल देशमें श्रावस्ती नामकी (एक) नगरी थी । वहाँ सुदत्त नामक कोई धनी रहता (था) । वह नित्य दरिद्रों अनाथोंको भोजन देता । इस प्रकार दुनियामें उसका नाम

अनाथपिंडक हो गया। उसने किसी राजकुमारसे बगीचा खरीदा और वहाँ बुद्धके लिये विहार बनाया। श्रावस्तीमें जेतवनके अनाथ-पिंडकके आराम में बुद्ध विहार करते (थे)।]

उपर्युक्त हिन्दीवाले वाक्योंका अपने संस्कृतमें अनुवाद करो।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग गौरी शब्दके रूप पठन्ती से मिलते जुलते होते हैं, जैसे—

प्रथमा	गौरी	गौर्यौ	गौर्यः
सम्बोधन	हे गौरि	,,	,,
द्वितीया	गौरीं	,,	,,
तृतीया	गौर्या	गौरीभ्यां	गौरीभिः
चतुर्थी	गौर्यै	,,	गौरीभ्यः
पंचमी	गौर्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	गौर्योः	गौरीणां
सप्तमी	गौर्यां	,,	गौरीषु

इसी तरह निम्न शब्द भी—

गौतमी (नाम)	प्रजापती (नाम)	वाराणसी (काशी)
रोहिणी (नाम)	कात्यायनी (नाम)	पार्वती (नाम)
शर्वरी (रात)	कादम्बरी (शराब)	कुमारी (लड़की)
पृथ्वी (धरती)	मातुली (मामी)	गोपी (ग्वालिन)
पत्नी (भार्या)	यादृशी (जैसी)	तादृशी (तैसी)
भवती (आप)	पचन्ती (पकाती हुई)	प्राची (पूर्व दिशा)
प्रतीची (पच्छिम)	उदीची (उत्तर)	हिमानी (हिमपुञ्ज)

सन्धि—

११. ए + स्वरवर्ण = अय् + स्वरवर्ण, नगरे + इह = नगर् + ए + इह = नगर् + अय् + इह = नगरयिह ।

१२. ओ + स्वरवर्ण = अव् + स्वरवर्ण, भानो + इह = भान् अव् + इह = भानविह ।

१३. ऐ + स्वरवर्ण = आय् + स्वरवर्ण, सुतायै + इह = सुताय् + ऐ + इह=सुताय् + आय् + इह=सुतायायिह ।

१४. औ + स्वरवर्ण = आव् + स्वरवर्ण, हरौ + इह = हराव् इह = हराविह ।

एकोनविंशः पाठः

भानोः किरणाः प्रसरन्ति,	सूर्यकी किरणें फैलती हैं,
तिमिरं अपसरति·	अन्धकार दूर होता है।
मुखे यस्य मधुरं वचनं,	जिसके मुंहमें मीठा वचन (है)
तस्य देशे देशे च बन्धवः	उसके देश-देशमें बन्धु (हैं)।
सुभिक्षे संपन्ने च देशे	अन्नयुक्त सम्पत्तिशाली देशमें
न दस्यूनां भयम्	डाकुओंका भय नहीं ।

तिमिरं (अन्धकार) दस्युः (डाकू) सुभिक्षं (अन्नसम्पन्न)

उकारान्त पुँल्लिङ्ग भानु (सूर्य) शब्दके रूप—

प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
सम्बोधन	हे भानो	,,	,,
द्वितीया	भानुं	,,	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्यां	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	,,	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	,,	,,
षष्ठी	,,	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	,,	भानुषु

ऐसे ही निम्न शब्द भी—

मृत्युः (मौत)	इन्दुः (चन्द्रः)	सिन्धुः (सागर)
बाहुः (बाँह)	बन्धुः (भाई)	मनुः (नाम)
रघुः (राजा)	राहुः (ग्रह)	प्रियंगुः (• अनाज)
धातु (धातु)	गोमायुः (गीदड़)	कारुः (कवि)
लघुः (छोटा)	यदुः (नाम)	अनुः (नाम)
प्रभुः (स्वामी)	ऋभुः (देवता)	पृथुः (नाम)

विंशः पाठः

समुद्रः ह्लादते दृष्ट्वा पूर्णं चन्द्रं नभस्तले।
कुपुत्रः श्लाघते चित्ते परं दृष्ट्वा विपद्गतम्।
शनैः मार्गः शनैः कन्था शनैः पर्वतलंघनम्।
दृष्ट्वेमां पांडुपुत्राणामाचार्य, महतीं चमूम्।
स्पन्देते चाक्षिणी एते, मुखे पीडा प्रबाधते।
गिरौ नागाः वने सिंहाः पुरे कृष्णा कपोतिका।
गृहे च कूर्दते बालः शुकः बद्धश्च पंजरे।
नत्वा बुद्धं च धर्मं च संघं च रत्नत्रयम्।
लंघते पर्वतान् दुर्गान् वन्दते मारमर्दनम्।
मोदते मानुषे लोके तादृशः विरलः जनः।

[समुद्र खुश होता है, आकाशमें पूर्ण चन्द्र देख कर।
कुपुत्र चित्तमें श्लाघा करता है, दूसरेको विपदमें पड़ा देख कर।
धीरेसे मार्ग, धीरेसे कथरी, धीरेसे पर्वतका लांघना।
आचार्य, पाण्डुपुत्रोंकी इस बड़ी सेनाको देखकर।
आंखें फरकती हैं और मुखमें पीड़ा बाधा देती।
पहाड़ में नाग, वनमें सिंह, नगरमें काली कबूतरी।
घरोंमें कूदता बालक और पिंजड़ेमें बंधा तोता।
बुद्ध और धर्म और संघ तीनों रत्नोंको नमस्कार कर।
कठिन पर्वतों को लाँघता, बुद्ध को बन्दना करता।
मानुष लोक में मोद करता है, ऐसा विरल जन (है)।]

नभस्तलम्(आकाशतल) विपद्गतः(विपदमेंपड़ा) शनैः (धीरे)
कन्था (कथरी) लङ्घनम् (चढ़ना) महती (बड़ी)
चमू (सेना) शुकः (तोता) पंजरम् (पिंजड़ा)
कपोतिका (कबूतरी) स्पन्दते (फड़कता है) कूर्दते (कूदता)
रत्नत्रयम् (तीन रत्न) वन्दते (वन्दना करता) मारमर्दनम् (बुद्ध)
अक्षिणी (दो आँखें) प्रबाधते (बहुत पीड़ा करता है) नत्वा (नमस्कार कर)

आत्मनेपद बाध (पीड़न) धातु वर्तमान काल (लट्)—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	बाधते	बाधेते	बाधन्ते
म०	बाधसे	बाधेथे	बाधध्वे
उ०	बाधे	बाधावहे	बाधामहे

इसी तरह निम्न धातु भी—

एधते (बढ़ता है) शोभते (शोभादेता०) नाथते (मांगता है)
वन्दते (वंदना करता०) स्पन्दते (हिलता है) मोदते (मोद करता०)
ददते (देता है) दधते (धारता है) एजते (काँपता है)
स्वादते (स्वाद लेता०) लोकते (देखता है) लोचते (चमकता है)
कूर्दते (कूदता है) ग्रन्थते (बांधता है) कत्थते (प्रलापकरता०)
भ्राजते (चमकता है) ह्लादते (खुश होता०) क्षमते (सहता है)
वंटते (बांटता है) मर्दते (मर्दता है) श्लाघते (झूठी प्रशंसा करता है)

सन्धि—

१५. ए + (ह्रस्व) अ = ए, पुस्तके + अत्र = पुस्तकेऽत्र ।

१६. ओ + (ह्रस्व) अ = ओ, पुरुषो + अत्र = पुरुषोऽत्र ।

१७. स् + = श्श, रामस् + शेते = रामश्शेते ।

१८. स् + च = श्च, रामस् + च = रामश्च ।

१९. (अनुस्वार) + स्वर = म् + स्वर, सुखं + अस्ति = सुखमस्ति ।

एकविंशः पाठः

वन्देऽहं तं सदा बुद्धं लोकालोकं जगद्गुरुम् ।
सर्पो दंशयते बालं बालः शीघ्रं मरिष्यति ।
मोदिष्यते प्रजा सर्वा श्रुत्वा बुद्धमिहागतम् ।
लंघिष्यते महासिन्धुं हनूमान् वीरपुंगवः ।
चेतयते देवदूतः मृत्युरूपेण मानुषान् ।
स्वादिष्यते फलं मूलं, नाडीयं स्पन्दयिष्यते ।

[लोकके प्रकाश जगद्गुरु बुद्धको मैं सदा वंदना करता हूँ ।
सर्प बालकको काटता है, बालक शीघ्र मरेगा ।
बुद्धको यहाँ आया सुन कर सारी जनता खुश होगी ।
वीरपुंगव हनूमान् महासागरको लांघेगा ।
मृत्युरूप से देवदूत मनुष्योंको चेताता है
फल-मूल खायेगा, यह नाड़ी फड़केगी ।]

लोकालोक (लोक-प्रकाश) इह (यहाँ) आगतः (आया) नाडी (नाड़ी) दंशयते (डंसता है) श्रुत्वा (सुन कर)

मोद (खुश होना) आत्मनेपदी, भविष्यत्काल (लृट्)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
म०	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उ०	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

ऐसे ही—

दंशिष्यते (डंसेगा) तर्जयिष्यते (डाँटेगा)
चेतयिष्यते (चेतायेगा) त्रोटयिष्यते (तोड़ेगा)
वाधिष्यते (बाधेगा) वंदिष्यते (वंदना करेगा)

सन्धि—

२०. : + श = श्श, हरिः + शेते = हरिश्शेते ।

२१. : + स = स्स, छात्राः + सर्वे = छात्रास्सर्वे ।

२२. : + व्यंजन = ओ, ओ, रामः + गतः = रामो गतः ।

२३. अ + : + आ = आ, इ, उ, ए, ऐ, ओ, औ, = य, र, ल, व, ग, घ, ज, झ, द, छ अ आ, सर्वः + आगतः सर्व आगतः ।

द्वाविंशः पाठः

सत्यं तदेव सकलं मुनिना यदुक्तम् ।
अमृतस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।
शोभेते जानकीरामौ जनकानां सभास्थले ।
स्वादध्वं फलमूलानि वन्दध्वं धर्मनायकम् ।
लंघध्वं उदधिं वीरा आददध्वं जगद्धनम् ।
विद्यया याति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये वको यथा ।
दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः ।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युः एव न संशयः ।

[सत्य वही सब (है) जो मुनिने कहा ।
अमृत और पथ्यका वक्ता और श्रोता दुर्लभ (है) ।
जनकोंके सभास्थलमें जानकी और राम शोभा देते हैं ।
फल-मूल खाओ, धर्मनायककी वंदना करो ।
वीरों, उदधिको लांघो, जगत्के धनको लो ।
विद्यासे विनम्रता को प्राप्त करता है, विनयसे पात्रताको ।
सभाके मध्यमें नहीं शोभा देता, हंसके मध्य जैसे बगला ।
दुष्ट पत्नी, शठ मित्र और जवाब देनेवाला नौकर ।
सर्पवाले घरमें रहना, (यह) मृत्यु ही है, (इसमें) संशय नहीं ।]

अमृतं (मीठा, अमृत) पथ्यः (स्वास्थ्य-उपयोगी)
वक्ता (बोलनेवाला) श्रोता (सुननेवाला)
जनकाः (विदेहके राजा) धर्मनायकः (धर्मके नेता, बुद्ध)

उदधिः (समुद्र)　　आददध्वं (ले लो)
पात्रता (योग्यता)

शोभ (शोभा देना) आत्मनेपदी धातु,
आज्ञा (लोट्) का रूप—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचय
प्र०	शोभतां	शोभेतां	शोभन्तां
म०	शोभस्व	शोभेथां	शोभध्वं
उ०	शोभे	शोभावहै	शोभामहै

२४. त् + च = च्च, तत् + च = तच्च ।
२५. त् + ट = ट्ट, तत् + टीका = तट्टीका (उसकी टीका) ।
२७. व्यंजन + अनुनासिक = अनुनासिक + अनुनासिक,
त + त् + मित्रम् = तन्मित्रम्, षट् + मित्राणि = षण्मित्राणि (छ मित्र) ।

त्रयोविंशः पाठः

कोकिला[२३] इव जायन्ते वाचालाः कामकारकाः ।
उत्पादका[२३] न बहवः कवयः शरभा[२३] इव ।
कवीनामगलद् दर्पो[२२] नूनं वासवदत्तया ।
अहं बुद्धञ्च[२६] धर्मं च संघञ्च शरणं[२६] गतः ।
उपासकं[१८] श्चाहं[४]मस्मि शाक्यपुत्रस्य शासने ।

कीर्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।
सागरस्य परं पारं कपिसेनेव[2] 'सेतुना' ।

[स्वेच्छाचारी वाचाल कवि कोयल जैसे होते हैं ।
उनमेंसे बहुतेरे शरभ की तरह उत्पादक नहीं (होते) ।
अवश्य 'वासवदत्ता' द्वारा कवियोंका दर्प गल गया ।
मैं बुद्ध, धर्म और संघकी शरण गया ।
और मैं शाक्यसिंहके शासनमें उपासक हूँ ।
कुमुदसी उज्ज्वल प्रवरसेनकी कीर्ति 'सेतु' द्वारा सागरके पार
(उसी तरह) गई, जैसे (रामकी) कपिसेना ।]

जायन्ते (उत्पन्न होते हैं)	वाचालः (बकवादी)
कामकारकाः (स्वेच्छाचारी)	बहवः (बहुतेरे)
शरभः (एक कल्पित जन्तु)	दर्पः (गर्व)
नूनं (अवश्य)	'वासवदत्ता' (सुबन्धु की कृति)
प्रवरसेनः (कविनाम)	कुमुदोज्ज्वला (कुमुदपुष्पजैसी निर्मल)
परं पारं (परले पार)	'सेतुः' (सेतुबन्ध काव्य)

२७. इ, उ, ए, ऐ, ओ, औ + ः + इ, उ, ए, ऐ, ओ, औ,
य, र, व, ल, वर्गान्त अक्षर = इ० + ः + र् + ० ।

हरिः + इव = हरिरिव,	भानुः + इव = भानुरिव,
हरिः + एव = हरिरेव,	गौः + इव = गौरिव,
यतिः + उदकं = यतिरुदकं,	अरिः + गच्छति = अरिर्गच्छति ।

—oCXOXOo—

चतुर्विंशः पाठः

पत्रम्—

कोलम्बनगरात्
ज्येष्ठशुक्लैकादश्यां
सप्तत्युत्तरचतुर्विंशतिशततमे बुद्धाब्दे

मित्रवर,

अद्यैव लब्धं कृपापत्रं, मोदेतराम् । इदानीं अहमत्र संस्कृतमपि पठामि । तत्र सांकृत्यायनस्य पुस्तकं अतीव सुगमम् । अहं तस्य पंचापि पुस्तकानि पठिष्यामि । एवं व्याकरणस्य छन्दोऽलंकारयोश्च बोधः सुगमेन मार्गेण भवति । युष्माकं भ्राता रुग्णोऽभवत्, स इदानीं कथं भवति ? इति, लिखति—

भवदीयः
धर्मदत्तः

(पत्रानुवाद)

कोलम्बो नगरसे
ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी,
२४७० बुद्धाब्द (१९२६) ई०

मित्रवर,

आज ही आपका कृपापत्र मिला, अति प्रसन्न हुआ हूँ । इस समय मैं यहाँ संस्कृत भी पढ़ता हूँ, तिसमें सांकृत्यायनकी पुस्तक बड़ी सुगम है । मैं उसकी पाँचों पुस्तकें पढ़ूँगा । इस प्रकार व्याकरण, छन्द और अलंकारका बोध आसानीसे होता है । तुम्हारा भाई बीमार था, वह इस समय कैसा है ? इति, लिख (रहा) है ।

भवदीय—
धर्मदत्त

मोदेतरां (अतिमुदित हूँ) अद्य (आज) बोधः (ज्ञान)

ऋकारान्त पुंलिङ्ग कर्तृ (करनेवाला) शब्द—

प्रथमा	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
सम्बोधन	हे कर्तः	,,	,,
द्वितीया	कर्तारं	,,	कर्तॄन्
तृतीया	कर्त्रा	कर्तृभ्यां	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे	,,	कर्तृभ्यः
पंचमी	कर्तुः	,,	,,
षष्ठी	,,	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
सप्तमी	कर्तरि	,,	कर्तृषु

इसी तरह निम्न शब्द भी—

दाता (देनेवाला) पाता (रक्षक) गन्ता (जानेवाला)
भोक्ता (भोगनेवाला) स्थाता (ठहरनेवाला) नेता (नायक)
जेता (जीतनेवाला) धाता (धारनेवाला) हर्ता (हरनेवाला)
हन्ता (मारनेवाला) स्रष्टा (सृजनेवाला) श्रोता (सुननेवाला)

पंचविंशः पाठः

ज्येष्ठशुक्लैकादश्यां

२४७० बुद्धाब्दे (१९२६ ई०)

पूज्ययोर्मातुश्चरणकमलयोः,

पूर्वमपि पत्रमेकं प्रेषितम्, परं तस्योत्तरं एतावता नागतम् । अहमस्मिन् ज्येष्ठपूर्णिमोत्सवेऽनुराधपुरं गच्छामि, भगिनी सुजाताऽप्यवदत् गमनाय । सा साम्प्रतं किंचित् संस्कृतमपि पठति । सर्वे वयं सुखेन भवामः । प्रतिदिनं देवो वर्षति । दिनं शीतलम् । रोगादीनां भयं नास्ति । इति निवेदयति—

मातुश्चरणसेवकः

श्रीवत्सः

एतावता (इस समय तक) साम्प्रतं (इस समय) किंचित् (थोड़ा)

ऋकारान्त स्त्रीलिंग मातृ (माता) शब्द—

प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
सम्बोधन	हे मातः	,,	,,
द्वितीया	मातरं	,,	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्यां	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	,,	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	,,	,,
षष्ठी	,,	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	,,	,,

ऐसे ही निम्न शब्द भी—

पितृशब्दसे मातृशब्दके रूपोंमें द्वितीया बहुवचनमें अन्तर है। ऋकारान्त स्त्रीलिङ्गवाले शब्द स्वसृ (बहिन) की तरह चलते हैं—

प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
सम्बोधन	हे स्वसः	,,	,,
द्वितीया	स्वसारं	,,	स्वसॄः

शेष रूप मातृवत्।

मातृष्वसृ (मौसी) पितृष्वसृ (बुआ) ननान्दृ (ननद)
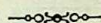
षड्विंशः पाठः

स्वल्पेनापि परिश्रमेण संस्कृतस्य ज्ञानं सुलभं, यदि सांकृत्यायनस्य पंचापि पुस्तकानि पठितानि। प्रथमपुस्तकमिव अन्यान्यपि पुस्तकानि अतिसरलानि। प्रथमे द्वितीये, तृतीये, चतुर्थे च संस्कृतव्याकरणस्यापि बोधो जायते। तत्र च नाना ग्रन्थेभ्यः मनोहराः सन्दर्भाः प्रदत्ताः।

पंचमेन[२] पुस्तकेन[२] छन्दोऽलंकारयोः परिचयो भवति।

पठित्वा एतानि पुस्तकानि संस्कृतभाषायां लेखनस्य संभाषणस्य च सामर्थ्यं भवति।

जायते (होता है) सन्दर्भाः (वाक्यसमूह) सम्भाषणं (बोलना) एक शब्द विशेष्यके अनुसार पुंलिङ्ग, नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग तीनों हो सकता है। वैसे ही दूसरे संख्यावाची शब्द भी। एक एकवचनमें आता है, द्वि द्विवचनमें और बाकी बहुवचनमें, जैसे—

प्रथमा	पुंलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
१ (एकवचन)	एकः	एकं	एका
२ (द्विवचन)	द्वौ	द्वे	द्वे
३ त्रि, बहुवचन)	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
४ (चतुर् ,,)	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः

५ (पंच) ६ (षट्) ७ (सप्त)
८ (अष्टौ, अष्ट) ९ (नव) १० (दश)
११ (एकादश) १२ (द्वादश) १३ (त्रयोदश)
१४ (चतुर्दश) १५ (पंचदश) १६ (षोडश)
१७ (सप्तदश) १८ (अष्टादश) १९ (एकोनविंशत्)
२० (विंशतिः) २१ (एकविंशतिः) २२ (द्वाविंशतिः)
२३ (त्रयोविंशतिः) २४ (चतुर्विंशतिः) २५ (पंचविंशतिः)
२९ (एकोनत्रिंशत्) ३० (त्रिंशतिः) ४० (चत्वारिंशत्)
५० (पंचाशत्) ६० (षष्टिः) ७० (सप्ततिः)
८० (अशीतिः) ९० (नवतिः) ९९ (एकोनशतम्)
१०० (शतम्) १०१ (एकोत्तरशतम्) १००० (सहस्रम्)
दशसहस्रम् (दस हजार) लक्षम् (लाख) कोटिः (करोड़)

इति सांकृत्यायनीयायां संस्कृतपाठमालायां
प्रथमं पुस्तकं समाप्तम् ।